प्री-स्कूल में सीखने के लिए मज़ेदार वर्कशीट

प्रणाली शर्मा और रीमा कौर

प्री-स्कूल शिक्षा उन बच्चों को दी जाती है जो तीन से छह साल के हों। अब प्री-स्कूली शिक्षा के तीन साल तथा पहली व दूसरी कक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में व्यक्त की गई 3 + 3 + 5 4 + की शिक्षणशास्त्रीय व पाठ्यचर्या सम्बन्धी पुनर्संरचना के अंश के तौर पर बुनियादी चरण (Foundational Stage) के अन्तर्गत आएँगे। तीन से आठ साल की उम्र को व्यापक रूप से प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) का चरण माना जाता है। एनईपी (NEP) 2020 के अनुसार, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में 'लचीला, बहु-आयामी, बहु-स्तरीय, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और खोज-आधारित सीखना' ज़रूर होना चाहिए... ताकि शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक-नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारम्भिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त किया जा सके (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पैरा 1.2, पेज 9)।

प्री-स्कूलों में व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाली निर्देशात्मक सामग्री है वर्कशीट। वर्कशीट खुले पन्नों के रूप में एक छपी हुई निर्देशात्मक सामग्री होती है, जिसमें ऐसे प्रश्न और कार्य होते हैं जो बच्चों को किसी विषय के बारे में खोजने और सीखने में मदद करते हैं। शिक्षकों के लिए भी वर्कशीट आकलन का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

दुर्भाग्य से, धीरे-धीरे वर्कशीट केवल एक तरह के प्रारूप में दोहराए जा रहे सवालों का अभ्यास बन गई हैं, जिनका प्रायः एक ही सही जवाब होता है। कुछ लोग यह भी कह सकते हैं कि वर्कशीट में बच्चों को मदद करने वाले सवाल होते हैं जो खोज-आधारित सीखने को बढ़ावा देते हैं। किन्तु प्रारम्भिक बाल्यावस्था में इनके प्रयोग की उपयुक्तता पर सवाल उठाया जा सकता है। शोध ने बार-बार प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल व खेल-आधारित सीखने के महत्त्व को स्थापित किया है। लेकिन खेल के माध्यम से सीखने बनाम ज़्यादा अकादमिक पद्धतियों के माध्यम से सीखने के बीच का द्विभाजन अब भी बना हुआ है। समय की माँग ने तीन साल की छोटी उम्र के बच्चों पर यह दबाव बना दिया है कि वे अक्षरमाला, संख्याएँ व गिनती जानें; आकृतियाँ पहचानें इत्यादि। जबकि वे इस उम्र में इसके लिए पूरी तरह तैयार नहीं होते हैं। हाल ही में, संरचनात्मक आकलन में बच्चों की प्रगति के प्रामाणिक साक्ष्य इकट्ठा करने पर दिए जा रहे ज़ोर ने कॉपियों और वर्कशीटों में क्लासवर्क और होमवर्क को और ज़्यादा बढ़ा दिया है। इससे विकास की दृष्टि से उपयुक्त प्रक्रियाओं की उपेक्षा होती है और ऐसे परिदृश्यों को बढ़ावा मिलता है जहाँ छोटे बच्चों को अधिगम और आकलन के ऐसे कार्यों में ज़बरदस्ती ढाला जाता है जो उनकी सीखने की ज़रूरतों के अनुरूप नहीं होते हैं।

फिर भी वर्कशीटों की प्रभाविता को कम करके नहीं आँका जा सकता, क्योंकि साथ-ही-साथ उन्हें सीखने और आकलन के लिए अधिक संज्ञानात्मक (अकादमिक) पद्धति की तरह वर्गीकृत किया जाता है। चलिए देखते हैं कि वर्कशीट को कैसे प्रभावशाली तरीक़े से तैयार किया जा सकता है और प्रारम्भिक बाल्यावस्था में सीखने के प्रेरणादायक व समृद्ध वातावरण में, दूसरी खेल-आधारित शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रियाओं के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है — ख़ासतौर से, प्री-स्कूल वर्षों में। ऐसा करने के लिए पहले हम प्री-स्कूल कक्षा में आमतौर से इस्तेमाल की जाने वाली कुछ वर्कशीट पर नज़र डालेंगे :

प्री-स्कूल में आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली वर्कशीट

इन वर्कशीट की जाँच करते हुए बहुत-सी गम्भीर चिन्ताएँ सामने आती हैं। सामान्यतः, इन वर्कशीटों के यह लक्षण होते हैं :

- पारम्परिक प्रारूप पर बनी होती हैं, जैसे नक़ल करके लिखना, अनुरेखण करना, मिलान करना आदि।
- बच्चों के सूक्ष्म पेशीय कौशलों और आँख व हाथ के समन्वय को विकसित करने के उद्देश्य से बनती हैं।
- बहुत छोटे बच्चों को दे दी जाती हैं जिनका शायद छपी हुई सामग्री के साथ एक सार्थक सम्बन्ध तब तक विकसित नहीं हुआ होता है।
- इस बात को मानकर चलती हैं कि शिक्षक ने उस अवधारणा को खेल-आधारित गतिविधियों के माध्यम से परिचित करा दिया होगा।

- केवल कुछ अवधारणाओं पर केन्द्रित होती हैं या अवधारणाओं से भरी होती हैं।
- स्वस्थ रवैए, आलोचनात्मक सोच के कौशल, मूल्यों, सहभागिता, संवाद, रचनात्मकता, सामाजिक-भावनात्मक विकास के आयामों को नकारती हैं या कम प्रतिनिधित्व देती हैं।
- बच्चों के अनुभव और रुचियों से जुदा, अलग और कटी हुई होती हैं।
- बच्चों को बहुत कम या न के बराबर बौद्धिक, रचनात्मक या भावनात्मक प्रोत्साहन देती हैं।
- हो सकता है शिक्षक/ स्कूल द्वारा उस विशिष्ट कक्षा/ बच्चों के लिए न बनाई गई हों जिन्हें इनका उपयोग करना हो।
- चित्रों, रंगों आदि को शामिल कर यह आभास पैदा करती हैं कि ये बच्चों के लिए बहुत दोस्ताना हैं।
- तथ्यात्मक और अवधारणात्मक त्रुटियों और अशुद्धियों से भरी हो सकती हैं।
- शिक्षक के लिए स्पष्ट रूप से परिभाषित निर्देश नहीं होते या ऐसे निर्देश हो सकते हैं जो भ्रामक हों।
- एक ही भाषा में तैयार की गई होती हैं, यानी जो भाषा शिक्षा का माध्यम होती है और अक्सर बच्चे के घर में बोलचाल की भाषा वह नहीं होती।
- विकलांग बच्चों की उपेक्षा करती हैं, जिन्हें एक बदले हुए डिज़ाइन और प्रारूप से फ़ायदा हो सकता है।
- प्री-स्कूल कक्षा में मूल्यांकन के लिए उपयोग किया जाने वाला नियमित उपकरण बन जाती हैं और क़िस्सों के रूप

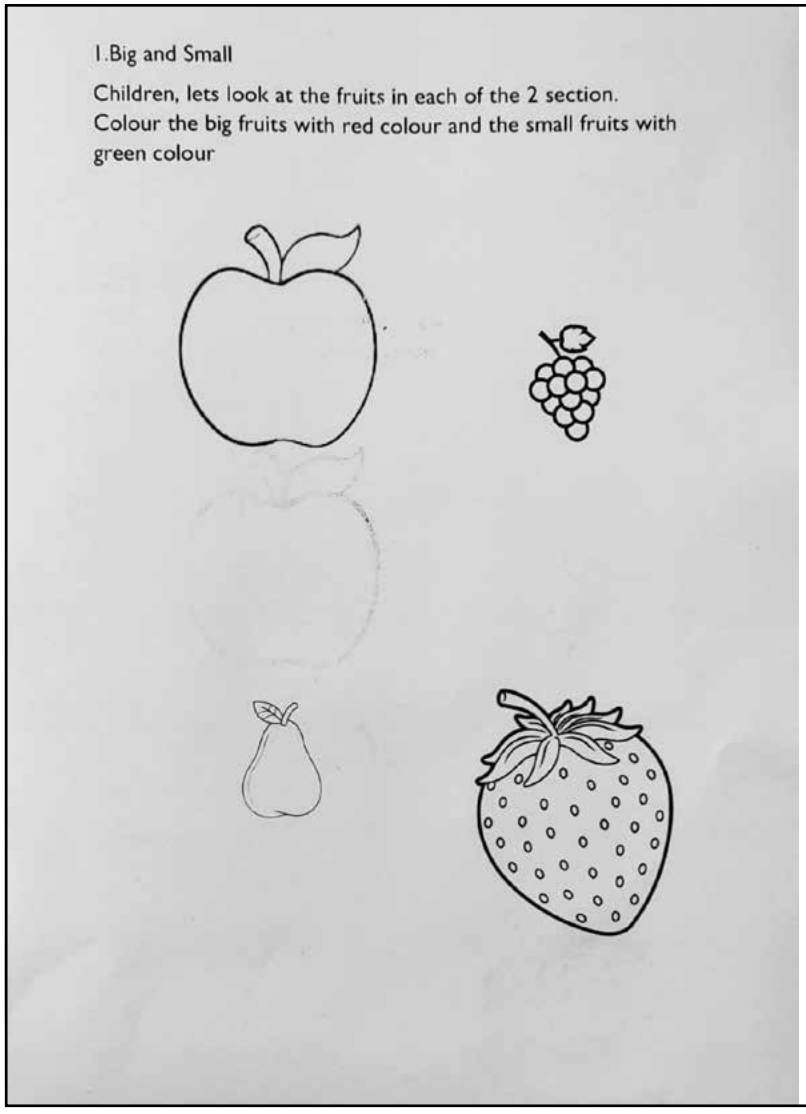

स्ट्रॉबेरी को बाक़ी फलों (सेब, अंगूर का गुच्छा और नाशपाती) से बड़ा दिखाया गया है जबकि असली जीवन में, बहुत सम्भव है कि वह सबसे छोटी हो। बच्चों से कहा जाता है कि वे बड़े फल में लाल और छोटे फल में हरा रंग भरें। बच्चों को अपना काम, वर्कशीट में जो कुछ लिखा/ दिख रहा है उसके हिसाब से करना चाहिए या फिर जो जानकारी उन्हें असली दुनिया से हासिल है, उसके हिसाब से? बच्चे को हर एक अंगूर को देखना चाहिए या पूरे गुच्छे को? वर्कशीट में जो दिखाया गया है और जो बच्चे अनुभव करते हैं, उसमें विरोधाभास है। छवियाँ भी किसी भी सन्दर्भ के बग़ैर दी गई हैं।

चित्र- 1 : प्री-स्कूल में आमतौर से इस्तेमाल होने वाली वर्कशीट का एक उदाहरण

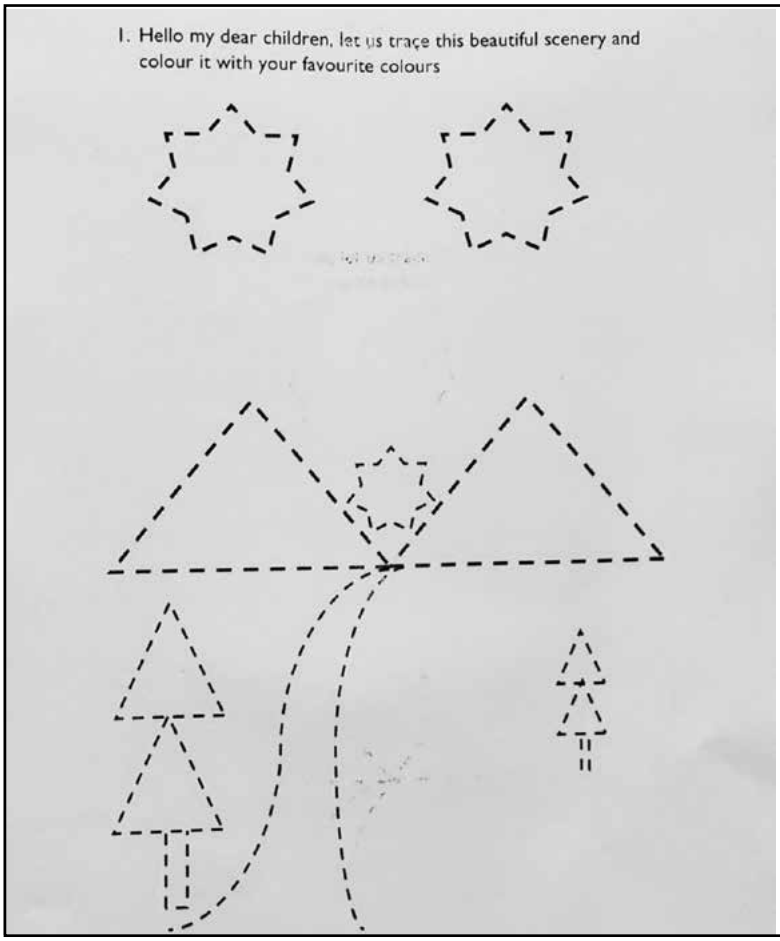

हालाँकि बच्चों को अपने पसन्द के रंग करने की आज़ादी है, लेकिन दो पहाड़ियों, एक नदी और पेड़ों का वही घिसा-पिटा नमूना एक और पीढ़ी को 'विरासत' में दे दिया गया है! क्या यह बेहतर नहीं होता अगर बच्चों को उनके परिवेश से ही अलग-अलग चीज़ें बनाने को कहा जाता?

चित्र- 2 और 3 : प्री-स्कूल में आमतौर से इस्तेमाल होने वाली वर्कशीटों के दो और उदाहरण

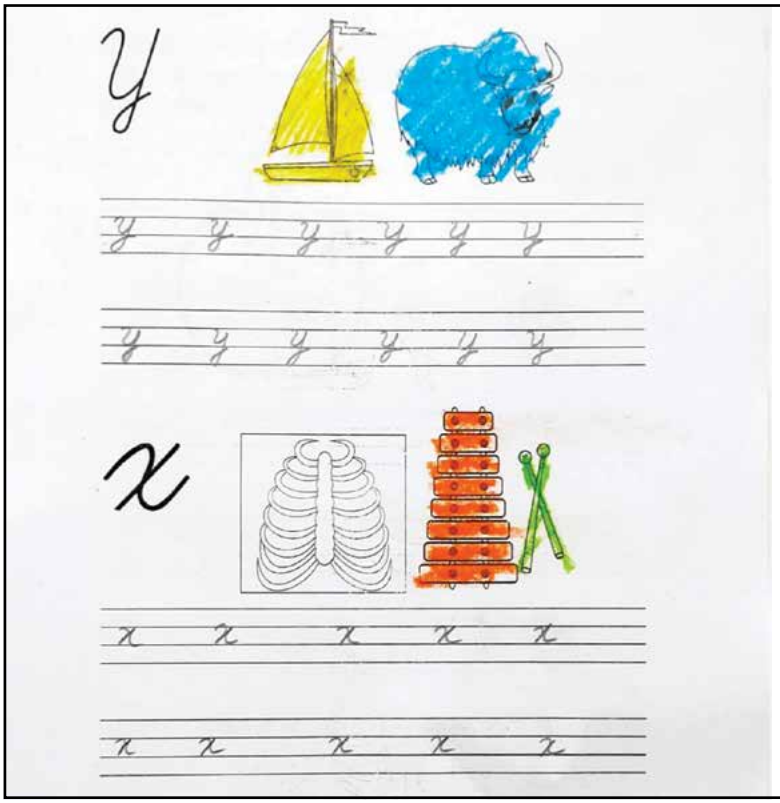

वर्णमाला (अक्षर) की वर्कशीट का एक आम उदाहरण जिसमें बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे चार रेखाओं के बीच कर्सिव अक्षरों में लिखें और सुन्दर लिखावट विकसित कर लें। बच्चे अगर जल्दी से अक्षरों (कैपिटल और स्मॉल, दोनों) और अक्षरों के नामों को याद कर भी लें तो भी यह उन्हें छपी हुई सामग्री के साथ एक सार्थक सम्बन्ध बनाने में मदद नहीं करेगा। बच्चों के लिए इन बातों को जानना और समझना मुश्किल है कि 'yacht' व 'yak' का पहला अक्षर 'y' और 'x-ray' व 'xylophone' का पहला अक्षर 'x' है या कि ये अक्षर उनके जाने हुए और इस्तेमाल में आने वाले शब्दों में आते हैं। ये चार छवियाँ केवल रंग भरने के लिए भी हो सकती हैं। और इस बात को और ज़ोरदार ढंग से नहीं कहा जा सकता कि ये शब्द बच्चों के अनुभवों से कितने कटे हुए हैं।

में दर्ज होने वाले रिकार्ड, जाँच-सूचियों आदि को बाहर ढकेल देती हैं।

- साक्ष्य इकट्ठे करने के लिए डिज़ाइन की जाती हैं जिससे सीखने के लिए प्रतिक्रिया देने की जगह नहीं बचती।
- सीखने के केवल कुछ ही प्रतिफलों के साथ जुड़ती हैं, अगर जुड़ती भी हैं तो।

ये गम्भीर चिन्ताएँ हमें अच्छी वर्कशीट की विशेषताओं के बारे में सोचने के लिए मौक़े देती हैं। एक अच्छी वर्कशीट के यह लक्षण होने चाहिए :

- कार्य की प्रकृति के अनुसार मिश्रित प्रारूपों का उपयोग करती हों।
- विकासोन्मुख और प्रासंगिक रूप से उपयुक्त हों।
- उनकी भाषा सरल, स्पष्ट और प्रासंगिक रूप से उपयुक्त हो।
- तथ्यात्मक और प्रासंगिक रूप से सही हों।
- उत्सुकता और सोच को जगाती हों।
- बच्चों के सीखने के चरण और ग़लतफ़हमियों (अगर कोई हैं तो) की पहचान करने में मदद करती हों।
- सीखने के प्रतिफलों के साथ जुड़ती हों।
- विकास के सभी क्षेत्रों को शामिल करती हों।
- उनमें अनुकूलन के लिए समावेशी डिज़ाइन और लचीलापन हो।
- प्री-स्कूल में पाठ्यचर्या की वस्तुओं में से एक वस्तु के रूप में इस्तेमाल होती हों।

एक शिक्षक का नज़रिया

नागालैण्ड के एक प्राइवेट प्री-स्कूल स्कूल में पढ़ाने वाली एक अध्यापिका के साथ हुए इंटरव्यू के ज़रिए हमें यह गहरी समझ हासिल होती है कि आमतौर से प्री-स्कूल वर्षों में वर्कशीट किस तरह इस्तेमाल की जाती हैं। उन्होंने बताया कि हाल ही में, महामारी के दौरान वर्कशीट घर भेज दी जाती थीं ताकि पालकों के पास कुछ सामग्री हो और बच्चों के पास 'कुछ करने को' हो। जब बच्चे स्कूल में होते हैं, तब उन्हें आमतौर पर बिल्कुल शुरुआत से ही वर्कशीट पकड़ा दी जाती हैं। ईसीसीई कार्यक्रम के शुरुआती दो-तीन महीनों में वे ख़ूब सारी ड्रॉइंग, रंग भरने और ट्रेसिंग की गतिविधियों में लगे रहते हैं। इससे शिक्षक को आकृतियों, अक्षरों और संख्याओं जैसी अवधारणाओं के आकलन में मदद मिलती है और बच्चे की प्रगति का साक्ष्य भी मिल जाता है। जब बच्चे इस शुरुआती दौर से गुज़र चुके होते हैं, तब उनका दूसरी अवधारणाओं से सम्बन्धित वर्कशीटों से भी इसी तरह परिचय कराया जाता है और उनका इस्तेमाल किया जाता है। अध्यापिका ने यह भी कहा कि अन्दर और बाहर खेले जाने वाले खेलों, संगीत व उससे जुड़ी गतिविधियों आदि के साथ ही वर्कशीट हर हफ़्ते होने वाला नियमित कार्य है। वर्कशीट का एक मानक सेट साल-दर-साल इस्तेमाल किया जाता है, हालाँकि यदि कोई शिक्षक सृजनशील हैं, तो वह ख़ुद की वर्कशीट तैयार कर सकते हैं।

यह अध्यापिका इस बात को स्वीकार करती हैं कि ज़्यादातर प्री-स्कूल अध्यापकों को एनईपी आने के उपरान्त रोचक और मज़ेदार वर्कशीट तैयार करने के लिए किसी-न-किसी तरह का प्रशिक्षण मिला है। लेकिन वे अपनी सीखी हुई चीज़ों को लागू नहीं कर पाए हैं और वाक़िफ़ हैं कि मौजूदा रूप में यह वर्कशीट ज़्यादा मददगार नहीं हैं। नागालैण्ड की ही एक अन्य सरकारी प्री-स्कूल अध्यापिका ने साझा किया कि प्राइवेट और पब्लिक प्री-स्कूलों के बीच वर्कशीटों के इस्तेमाल में बहुत अन्तर है। वर्कशीटों को सभी बच्चों के लिए छपवाने की बात आने पर पब्लिक प्री-स्कूलों (सरकारी स्कूल और आँगनवाड़ी, दोनों ही) में अक्सर संसाधनों का संकट सामने आ जाता है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था के लिए 'मज़ेदार वर्कशीट'

एनसीईआरटी द्वारा तैयार की गई प्री-स्कूल पाठ्यचर्या (2019) विविध तरह की गतिविधियों के साथ 'मज़ेदार वर्कशीट' इस्तेमाल करने का सुझाव देती है। तो अब 'मज़ेदार' से क्या मतलब? जब शिक्षक यह कहते हैं कि वे चाहते हैं कि बच्चे 'मज़े करें', तब उनका क्या मतलब होता है? बच्चों के लिए तो ऐसी कोई भी गतिविधि 'मज़ेदार' हो सकती है जो उन्हें बिना किसी उद्देश्य के मज़ा दिलाए। एक वयस्क के नज़रिए से ऐसी कोई भी गतिविधि जिसमें हँसी और मुस्कराहटें हों, वह 'मज़ेदार' कही जा सकती है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में अक्सर 'मज़े' को खेल के साथ जोड़कर देखा जाता है। एनईपी 2020 और प्री-स्कूल पाठ्यचर्या साफ़तौर पर खेल और खेल-आधारित सीखने पर ज़ोर देने के साथ ही प्री-स्कूल की कक्षा को 'मज़ेदार' वर्कशीटों के इस्तेमाल से सुखद बनाने के महत्त्व पर भी ज़ोर देते हैं। वर्कशीट मज़ेदार है या नहीं, यह निर्धारित करने में वर्कशीट की गतिविधि या कार्य (task) पर बच्चे की पसन्द और नियंत्रण की भी भूमिका होती है। एक वर्कशीट जो काम के जैसी लग रही हो, वह भी मज़ेदार हो सकती है पर यह बच्चों को दिए गए विकल्प, आज़ादी और नियंत्रण पर निर्भर करता है।

तो अब जो सवाल उठता है, वह यह है कि किस तरह की वर्कशीट प्री-स्कूल के बच्चों के लिए उपयुक्त हैं? क्या हम ऐसी वर्कशीटों को देख सकते हैं जो न केवल शैक्षिक हैं पर बच्चों के लिए आनन्ददायक भी हैं। चलिए देखते हैं उस प्रक्रिया को जिसका पालन अक्सर प्रारम्भिक बाल्यावस्था के लिए वर्कशीट तैयार करते समय किया जाता है।

चरण- 1 : योजना बनाना

एक प्री-स्कूल शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि वह पहले वर्कशीट तैयार करने के पीछे के कारण को तय करे। हर वर्कशीट को विकास के पाँचों क्षेत्रों — शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और भाषा — में एक ठोस उद्देश्य को पूरा करने की ज़रूरत है। बहुत-सी वर्कशीट केवल संज्ञानात्मक और शारीरिक विकास पर केन्द्रित होती हैं पर सामाजिक और भावनात्मक विकास को छोड़ देती हैं।

सवाल जिनके जवाब एक शिक्षक को इस चरण तक मालूम होने चाहिए :

1. इस वर्कशीट को तैयार करने के पीछे क्या उद्देश्य है?

   उदाहरण के तौर पर, विकास के किसी एक क्षेत्र में बच्चे की प्रगति देखना भी एक उद्देश्य हो सकता है।

2. मैं यह वर्कशीट किस आयुवर्ग के लिए तैयार कर रहा हूँ?

   उदाहरण के तौर पर, एक शिक्षक इसे तीन साल के बच्चों के लिए तैयार कर सकता है। उसे यह जानने की ज़रूरत है कि एक तीन साल के बच्चे से क्या अपेक्षा की जा सकती है। तीन साल का बच्चा चीज़ों को किसी एक विशेषता के आधार पर छाँट सकता है बनिस्बत एक छह साल के बच्चे के जो चीज़ों को एक से अधिक विशेषताओं के आधार पर छाँट सकता है।

3. इस वर्कशीट को तैयार करने के लिए मुझे कहाँ-कहाँ से सुझाव मिल सकते हैं?

   उदाहरण के तौर पर, एक शिक्षक साथी अध्यापकों के साथ चर्चा कर सकता है, व्हाट्सएप पर अध्यापकों के समूह से जुड़ सकता है या प्रारम्भिक बाल्यावस्था पर उपलब्ध लेखों और ब्लॉगों को भी देख सकता है।

चरण- 2 : तैयारी करना

हर वर्कशीट को प्रारम्भिक अधिगम के प्रतिफलों (जो प्री-स्कूल पाठ्यचर्या, 2019 में उल्लिखित हैं) के साथ जुड़ना चाहिए। यह वर्कशीट की वैधता को भी सुनिश्चित कर देता है। एक वर्कशीट को तब 'वैध' कह सकते हैं जब वह उसे माप पा रही हो, जिसे मापने के लिए वह बनाई गई है।

सवाल जिनके जवाब एक शिक्षक को इस चरण तक मालूम होने चाहिए :

1. यह वर्कशीट किस प्रारम्भिक अधिगम के प्रतिफल के साथ जुड़ती है?

   उदाहरण के तौर पर, शिक्षक दो-तीन प्रतिफलों को विभिन्न प्री-स्कूल लक्ष्यों में से इकट्ठा कर सकता है।

2. क्या यह वर्कशीट मुझे बच्चे के सीखने के बारे में बारीक़ समझ व जानकारियाँ देगी?

   उदाहरण के तौर पर, शिक्षक बच्चों से कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में निश्चित जवाबों की अपेक्षा कर सकता है।

3. मुझे किस तरह के शिक्षण की तैयारी करनी चाहिए?

   उदाहरण के तौर पर, शिक्षक को सीखने के वातावरण की तैयारी करनी हो सकती है या सामग्री तैयार/ प्राप्त करनी हो सकती है।

चरण- 3 : आकलन करना

तीसरा चरण है वर्कशीट का प्रयोग बच्चों के सीखने का आकलन करने के लिए करना। जब बच्चे वर्कशीट भर चुके हों, तब शिक्षक उनका इस्तेमाल उन क्षेत्रों की पहचान करने के लिए कर सकते है जहाँ सुधार की ज़रूरत हो। वर्कशीट के माध्यम से इकट्ठी की गई जानकारी अध्यापकों और पालकों, दोनों की ही मदद करती है।

सवाल जिनके जवाब एक शिक्षक को इस चरण तक मालूम होने चाहिए :

1. बच्चे को क्या समझ में आता है और क्या समझ में नहीं आता?

   उदाहरण के तौर पर, शिक्षक बच्चे के दिए हुए जवाबों के आधार पर उनके सीखने में मौजूद ग़लतफ़हमियों या कमियों की पहचान कर सकता है।

2. बच्चा क्या सीख रहा होना चाहिए?

   उदाहरण के तौर पर, बच्चे को क्या ग़लतफ़हमियाँ है, इसके आधार पर शिक्षक यह पहचान कर सकता है कि बच्चे को किस पर ध्यान देना चाहिए।

3. बच्चे के सीखने में जो कमी है, उस पर काम करने के लिए किस तरह का शिक्षण उपयुक्त रहेगा? उदाहरण के तौर पर, शिक्षक शिक्षण की कार्यनीति, उपयोग हुई दूसरी सामग्री या वर्कशीट को ही बदल सकता है।

'मज़ेदार वर्कशीटों' के लिए सुझाव

मज़ेदार वर्कशीट तैयार करने के लिए कुछ सुझाव :

1. *सामान्य वर्कशीट*

   कुछ वर्कशीट सामान्य प्रारूप में हो सकती हैं, जिनमें एक काग़ज़ की शीट पर एक कार्य दिया हुआ हो जिसे पेंसिल या क्रेयॉन से पूरा करना हो। अच्छी वर्कशीट तैयार करने के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए इन्हें और ज़्यादा रुचिकर बनाया जा सकता है।

   i. भूलभुलैया (Mazes) : रोचक प्रश्न-स्थितियों के लिए विभिन्न तरह की भूलभुलैया तैयार की जा सकती हैं। उदाहरण के तौर पर, काग़ज़ और क्रेयॉन ख़रीदने के लिए घर से बाज़ार की तरफ़ जाना, माँ बत्तख को उसके बच्चों तक लेकर जाना, एक लड़के को उसका खोया हुआ जूता ढूँढ़ने में मदद करना और एक मधुमक्खी को उसके छत्ते तक पहुँचाना। भूलभुलैया को बच्चे को सही स्तर की चुनौती देनी चाहिए, यानी कि न बहुत ज़्यादा आसान हो और न ही बहुत कठिन।

   ii. मिलान करना : दो स्तम्भों के बीच मिलान करने की जगह, बच्चे टेढ़ी-मेढ़ी लाइनों का इस्तेमाल कर पूरे पन्ने पर बिखरे हुए चित्रों, शब्दों और आकारों का मिलान कर सकते हैं। इससे बच्चों के पास पूरे पन्ने की जगह पर यहाँ-वहाँ जाने और खेलने का मौक़ा होगा और कार्य भी पूरा हो रहा होगा। मिलान करने के अन्य सृजनात्मक और ग़ैर-पारम्परिक तरीक़े खोजे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, इमोटिकोन (Emoticon) का विभिन्न चित्र-आधारित स्थितियों (चोट लगते हुए, दोस्तों के साथ खेलते हुए, हैरान होते हुए) से मिलान करना और अक्षर-ध्वनि सामंजस्य विकसित करने के लिए अक्षरों का शब्दों की पहली ध्वनियों से मिलान करना, जिन्हें चित्रों द्वारा दर्शाया गया हो ('pig' के लिए 'p', cake के लिए 'c', bus के लिए 'b')।

   iii. बिन्दु मिलाना : बच्चे बिन्दुओं को क्रम से जोड़कर ऐसा चित्र बना सकते हैं जिसे वे रंग सकें। बिन्दुओं के साथ संख्याओं (निर्भर करता है कि बच्चे कितने तक गिन सकते हैं) और यहाँ तक कि अक्षरों (a-z) को भी रखा जा सकता है। चित्र ऐसे हों जो बच्चों में रुचि और रोमांच पैदा करें, उदाहरण के लिए, कई पैरों वाला कीड़ा, एक स्टाइल भरा वाहन, एक उड़ता हुआ डायनासोर या कि एक टोपी पहने हुए जादूगर। बच्चों के सन्दर्भ से जुदा किसी भी तस्वीर से बचा जाना चाहिए, जैसे कि सफ़ेद पन्ने के बीच में एक सेब या एक स्ट्रॉबेरी, जो न तो बच्चों में रूचि जगाती है, न ही उन्हें उत्साहित करती है। एक छोटी और उबाऊ तस्वीर, जो पूरी तरह से बिन्दुओं से बनी हो, से बेहतर है एक बड़ा और अधिक विस्तृत चित्र जिसका केवल एक हिस्सा बिन्दुओं में हो।

   iv. विषम को छाँटना (Odd-one-out) : सार्थक परिदृश्य, जिनमें एक वस्तु, व्यक्ति या जानवर 'विषम' हो और दिए गए वर्ग में माफ़िक़ न बैठता हो, जैसे कि, पेड़ की डाल पर तोते और कौए के साथ बैठा हाथी, आसमान में उड़ता हुआ कछुआ, खाने की चीज़ों से भरा हुआ फ़्रिज जिसमें एक जूता भी रखा है। धीरे-धीरे सन्दर्भ से जुदा प्रारूप के तहत वर्कशीट में नई श्रेणियाँ और अमूर्त अवधारणाएँ भी शामिल की जा सकती हैं, जैसे कि सजीव और निर्जीव चीज़ें, ठोस और तरल पदार्थ, आकृतियाँ और खाद्य व अखाद्य वस्तुएँ।

   v. अन्तर ढूँढ़ना : दो एक जैसे दिखने वाले चित्र जो काफ़ी विस्तृत हों और जिनमें बच्चे गोला लगाकर या इशारा करके बता सकते हों कि कौन-सी जानकारियाँ ग़ायब हैं या अलग हैं। चित्र जितना विस्तृत, उतने ही बारीक़ अन्तर और उतनी ही बड़ी चुनौती।

vi. चित्र बनाना और रंग भरना : पन्नों पर चित्र बनाने और रंग भरने को भी निश्चित ही वर्कशीट माना जा सकता है। मनमाने चित्र बनाने के काम की बजाय, बच्चों को अपनी संस्कृति और आस-पास के माहौल के साथ जुड़ने के लिए कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, उन्हें घर जाकर एक ऐसी रोचक/ भारी वस्तु का चित्र बनाने को कहा जा सकता है जिसे वे स्कूल नहीं ला सकते, वे अपने परिवार का खाना खाते वक़्त का चित्र बना सकते हैं या फिर वे अपने घर के पसन्दीदा कोने में खेलते वक़्त का अपना ख़ुद का चित्र भी बना सकते हैं। बच्चे अपनी कल्पनाशीलता से भी चित्र बना सकते हैं, जैसे कि, जब वे बड़े हो जाएँगे तब कैसे दिखेंगे, स्कूल में जलसे के वक़्त वे क्या पहनना चाहेंगे या उनके सपनों की दुनिया कैसी दिखेगी। लेकिन ये वर्कशीट, बच्चों के रंग के चुनाव, लाइनों के बीच में रहकर रंग भर पाने की योग्यता या कुल मिलाकर उनके कला के कौशल के आकलन को अपना लक्ष्य न बनाएँ। कार्य की प्रकृति को देखते हुए विभिन्न सामग्री जैसे कि कलर पेंसिल, पेंट, सब्ज़ियों की छापों, अँगूठे की छापों आदि से बच्चों को परिचित कराया जा सकता है।

vii. वर्णमाला-पहचान वर्कशीट : अक्षर बनाना सीखने की शुरुआत अपने नामों की बड़ी रूपरेखाओं में रंग भरने और उन्हें सजाने से की जा सकती है। फिर धीरे-धीरे अपने नामों, दोस्तों और परिवार वालों के नामों और दूसरे जाने-पहचाने शब्दों के एक-एक अक्षर को पहचानने, उन पर गोला लगाने/ उनके नीचे रेखा खींचने और उनकी नक़ल करने की तरफ़ बढ़ा जा सकता है। इन परिचित शब्दों के साथ, अच्छा होगा कि सन्दर्भ के लिए विस्तृत चित्र हों जैसे कि चलते-फिरते रास्ते के दृश्य में ट्रक, बस और साइकिल। यह अलग-थलग रूप में स्मॉल और कैपिटल अक्षरों पर पेंसिल फेरने और उनकी नक़ल करने से बेहतर होगा जो कि 'फीकी (fading) वर्कशीटों' में आमतौर पर देखने को मिलता है जिनमें चार लाइन के प्रारूप पर, हर लाइन में घटते हुए दृश्य संकेतों के साथ, बार-बार स्मॉल और कैपिटल अक्षरों पर पेंसिल फेरी जाती हैं।

viii. संख्या-पहचान वर्कशीट : वर्णमाला वर्कशीटों के जैसे ही गिनती की वर्कशीट भी 'फीकी (fading) वर्कशीटों' या पंक्तियों में मौजूद कई सारी अलग-अलग वस्तुओं को गिनने से और बहुत ज़्यादा कुछ हो सकती हैं। इनमें जीवन्त और विस्तृत दृश्य हो सकते हैं, जैसे एक खेत या बग़ीचे का दृश्य जिसमें बच्चे सब्ज़ियों, फलों, पेड़ों, पक्षियों, तितलियों, किसानों, खेत के उपकरण जैसे कि ट्रैक्टर आदि को गिन रहे हों।

2. *काटो-चिपकाओ वर्कशीट*

वर्कशीट, जिन्हें बच्चे हाथ से फाड़कर या कैंची से काटकर किसी विशेष उद्देश्य के लिए या तो एक साथ जोड़ सकें या चिपका सकें। जैसे कि किसी पहेली के उलझे हुए हिस्सों को काटना और फिर व्यवस्थित करना, कपड़े को काटकर किसी मानव आकृति को सजाना, बिन्दुओं वाली रेखाओं पर काटते हुए काग़ज़ की टेढ़ी-मेढ़ी/ घुमावदार/ जालीदार झालरें बनाना, पक्षियों और जानवरों के चित्रों को काटना और सही खानों में चिपकाना, संख्याओं को काटना और उन चित्रों के सामने चिपकाना जिनमें उतनी ही संख्या की चीज़ें हों आदि।

3. *अक्षर-लेखन वर्कशीट*

वर्कशीट जिसका बुनियादी प्रारूप एक छोटे-से नोट या ख़त जैसा हो जिसे इस तरह मोड़ा जा सकता हो कि वह एक लिफ़ाफ़े का भी काम कर दे। इन्हें साथियों, अध्यापकों, पालकों आदि को या तो सीधे डाक से भेजा जा सकता है या व्यक्तिगत रूप से दिया जा सकता है। बच्चे नक़ल करके लिखकर, काग़ज़ पर मन-मुताबिक़ पेंसिल चलाकर (scribbling) और चित्र बनाकर शिक्षक की मदद से छपी हुई सामग्री के साथ सार्थक सम्बन्ध बना सकते हैं।

4. *जाँच-सूची वर्कशीट*

'खजाने की खोज' में मिली चीज़ों, उपस्थिति दर्ज करने, कौन-से खेल खेलने हैं — इसके लिए वोट देने, ख़रीददारी करने के रोल-प्ले वाले खेल, ख़रीदी जाने वाली वस्तुओं को अंकित करने, स्कूल पिकनिक के लिए रखी जाने वाली चीज़ों को चुनने आदि के लिए निशान लगाने हेतु जाँच-सूचियों का इस्तेमाल किया जा सकता है। ये चित्र-आधारित हो सकती हैं या इनमें चित्र और शब्द, दोनों भी हो सकते हैं जिससे बच्चों को छपे हुए शब्दों का एक सहयोग भरा अनुभव मिल सके। साथ में हो रही गतिविधि की प्रकृति को देखते हुए, अकेली और सामूहिक, दोनों ही तरह की वर्कशीट तैयार की जा सकती हैं।

5. *पॉप-अप वर्कशीट*

वर्कशीट, जिन्हें मोटे गत्ते वाले काग़ज़ पर छापा गया हो और जिनमें एक बड़े चित्र के अलग-अलग अंशों की

रूपरेखाएँ हों जिन्हें रंग करके, काटकर अलग करके, मोड़कर और किसी गत्ते या डिब्बे के टुकड़े पर चिपकाकर पॉप-अप दृश्य बनाते हैं। जैसे कि खेल-मैदान का पॉप-अप दृश्य बनाने के लिए वर्कशीट में पेड़ों, झूलों, कुछ बच्चों, एक पिल्ले और एक गेंद की रूपरेखाएँ हो सकती हैं। हर बच्चा अपना ख़ुद का पॉप-अप दृश्य बना सकता है या क्लास द्वारा मिलकर बनाए जा रहे किसी बड़े पॉप-अप में अपनी तरफ़ से एक अंश का योगदान कर सकता है। एक 'लटकता हुआ दृश्य' भी इसी तरह बनाया जा सकता है जिसमें बच्चे धागे का इस्तेमाल करके अपने 'कट-आउट' को जूते के डिब्बे में रखकर टाँग देते हैं और शार्क, ऑक्टोपस, बुलबुलों, समुद्री खरपतवार और पनडुब्बी के साथ पानी के अन्दर का दृश्य बना सकते हैं। इसी तरह सूरज, चाँद, रॉकेट, एक अन्य ग्रह के जीव और एक खगोलयात्री के साथ अन्तरिक्ष का दृश्य बना सकते हैं।

6. *खेल-आधारित वर्कशीट*

   बिंगो और तम्बोला की तरह ही इन वर्कशीट में चित्रों, अक्षरों, संख्याओं, आकृतियों और बच्चों के जाने-पहचाने शब्दों की 'ग्रिड' होती हैं, जिनमें बच्चे शिक्षक या किसी दोस्त के कहे अनुसार निशान लगाते हैं या रंग भरते हैं। यह अकेले भी खेला जा सकता है या फिर जोड़े बनाकर भी।

7. *रिकॉर्डिंग के लिए वर्कशीट*

   वर्कशीट, जो स्वतंत्र रूप से भरी जाती हैं और जिन पर नियमित अन्तराल में चर्चा की जाती है। जैसे कि रोज़ाना की वर्कशीट जिनमें बच्चे उनका दिन कैसे बीता — इसे दर्शाने वाले इमोटिकॉन में रंग भरते हैं, साप्ताहिक वर्कशीट जिनमें बच्चे उस हफ़्ते की उनकी सबसे मनपसन्द गतिविधि का चित्र बनाते हैं या पाक्षिक वर्कशीट जिनमें बच्चे स्कूल के बग़ीचे में उग रहे पौधे को ध्यान से देखकर उसकी वृद्धि को दर्ज करते हैं।

8. *पैटर्न बनाने की वर्कशीट*

   बच्चे रबड़, आलू या भिण्डी जैसी सब्ज़ियों, फूलों, माचिस की डिब्बियों, अँगूठे और हाथ की छापों आदि का इस्तेमाल करके ख़ुद से बनाई हुई मोहरों का उपयोग करके पैटर्नों की रचना करते हैं और उन्हें दोहराते हैं।

Bibliography and References

Ministry of Human Resource Development. (2020). *National Education Policy*

Department of Elementary Education (2019). *The Preschool Curriculum.* NCERT

National Council of Educational Research and Training. (2006) *Position Paper: National Focus Group on Early Childhood Education*

Kaymakcı, S. (2012). A Review of Studies on Worksheets in Turkey. *US-China Education Review*, 57-64

Hegde, A. & Cassidy, D. J. (2009). Kindergarten teachers' perspectives on developmentally appropriate practice: A study conducted in Mumbai (India). *Journal of Research in Childhood Education*, 23(3), 367-381. doi:10.1080/02568540909594667

Lynch, M (2015). More Play, Please: The Perspective of Kindergarten Teachers on Play in the Classroom. *American Journal of Play*, 7(3).

Wien, C. A. (2002). The Press of a Standardized Curriculum: Does a Kindergarten Teacher Instruct with Worksheets or Let Children Play? *Journal of the Canadian Association for Young Children*, 27(1), 10-17. https://journals.uvic.ca/index.php/jcs/issue/view/1321/144

प्रणाली शर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से मानव विकास और बाल्यावस्था अध्ययन में पीएचडी की है। उनका शोध कार्य वैष्णव मठों के बच्चों पर है। वे बड़े पैमाने के आकलनों, बाल्यावस्था अध्ययन तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम पर पाठ्यक्रम विकसित करने और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर शिक्षकों के लिए चलाए जाने वाले क्षमता निर्माण कार्यक्रमों से जुड़ी हुई हैं। वे स्कूल ऑफ़ कंटिन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर (एससीई-यूआरसी), अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में सीनियर लेक्चरर हैं। उनसे pranalee.sharma@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

रीमा कौर स्कूल ऑफ़ कंटिन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर (एससीई-यूआरसी), अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में सीनियर लेक्चरर हैं। उन्होंने गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली से बीएड और भारत रत्न डॉ. बीआर अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली से एमएड किया है। उनकी रुचि के क्षेत्र हैं प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा। उनसे rima.kaur@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सिमरन साध **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय